NATIONAL SCHOOL OF DRAMA
NEW DELHI

The following guideline is only for those who has received a call letter for appearing in the preliminary interview for admission to three year diploma course in Dramatics in the National School of Drama, New Delhi.

The interview will have the following sections:-

1. Written test
2. Practical Test
3. Analytical capacity Test

1. Written Test:

This is to test the student's critical aptitude and power of expression in Hindi and in English.

2. Practical Test:

a) One dramatic and one poetry passage to be prepared and enacted. This is to be chosen from among the passages provided.

b) One dramatic passage of his/her choice to be enacted in any language.

c) Ability sing/play instrument and to dance/movement/yoga.

d) Ability to draw, paint, design to test visual aptitude.

e) Ability to express directorial ideas & aptitude.

3. Oral Test:

This is to test:

a) General Knowledge regarding theatre and other performing arts.

b) The candidate's ideas and the capacity to express them.

c) Understanding & Analysis from among the list of plays provided. The candidates should be prepared to discuss any two plays mentioned in the list enclosed.

The students may bring visual material of any painterly, sculptural or design work they have done. They are also advised to bring their published creative or critical writing on Theatre/Art/Music etc. if any. If the students have CD/DVD of the play they have performed or directed or designed they may submit it to the committee on the day of preliminary interview.

****

READING MATERIAL

S. No.	Writer Name	Play Name
1.	Kalidasa	Abhijnanasakuntalam
2.	Bhasa	Karnabharam / Madhyam Vyayoga
3.	Rabindra Nath Tagore	Raktakarabi (Lal Kaner)
4.	Bhartendu Harish Chandra	Andher Nagari
5.	Bijan Bhattacharya	Nabanna
6.	Mohan Rakesh	Adhe Adhure / Ashad Ka Ek Din
7.	G. Shankara Pillai	Karutha Deivathe Thedi
8.	Badal Sircar	Pagla Ghora / Juloos
9.	Vijay Tendulkar	Khamosh adalat jari hai
10.	C.S. Kambar	Jo Kumaraswamy
11.	Girish Karnad	Agni Aur Barsha/ Nāga-Mandala
12.	Mahesh Elkunchwar	Virasat
13.	Satish Alekar	Begum Barve / Mahanirvan
14.	Kavalam Narayan Panikkar	Theyya Theyyam
15.	Tripurari Sharma	Bahu
16.	Balwant Gargi	Loha Kutt / Sanjha Chulha
17.	Arun Sharma	Ahar
18.	Shafat Khan	Shobhayatra / Mumbaiche Kavale
19.	Sanjay Pawar	Koan Mhanate Takka Dila?
20.	Sophocles	Electra / King Oedipus
21.	William Shakespeare	Hamlet / Macbeth
22.	Henrik Ibsen	Ghost / A Doll's House
23.	Anton Chekhov	Three Sisters / The Cherry Orchard
24.	Bertolt Brecht	Three Penny Opera / Mother Courage & her children
25.	Dario Fo	Can't pay won't pay / Accidental Death of an Anarchist
26.	Moliere	Miser / The Bourgeois Gentleman
27.	Arthur Miller	Death of a Salesman/All my sons

मल्लिका : नहीं, तुम काशी नहीं गये। तुमने संन्यास नहीं लिया। मैंने इसलिए तुमसे यहाँ से जाने के लिए नहीं कहा था। ...मैंने इसलिए भी नहीं कहा था कि तुम जाकर कहीं का शासन-भार सँभालो। फिर भी जब तुमने ऐसा किया, मैंने तुम्हें शुभकामनाएँ दीं-यद्यपि प्रत्यक्ष तुमने वे शुभकामनाएँ ग्रहण नहीं कीं।

ग्रन्थ को हाथों में लिये जैसे अभियोगपूर्ण दृष्टि से उसे देखती है।

मैं यद्यपि तुम्हारे जीवन में नहीं रही, परन्तु तुम मेरे जीवन में सदा बने रहे हो। मैंने कभी तुम्हें अपने से दूर नहीं होने दिया। तुम रचना करते रहे, और मैं समझती रही कि मैं सार्थक हूँ, मेरे जीवन की भी कुछ उपलब्धि है।

ग्रन्थ को घुटनों पर रख लेती है।

और आज तुम मेरे जीवन को इस तरह निरर्थक कर दोगे?

ग्रन्थ को आसन पर रखकर उद्विग्न दृष्टि से उसकी ओर देखती रहती है।

तुम जीवन से तटस्थ हो सकते हो, परन्तु मैं तो अब तटस्थ नहीं सकती। क्या जीवन को तुम मेरी दृष्टि से देख सकते हो? जानते हो मेरे जीवन के ये वर्ष कैसे व्यतीत हुए हैं? मैंने क्या-क्या देखा है? क्या से क्या हुई हूँ?

उठकर अन्दर का किवाड़ खोल देती है और पालने की ओर संकेत करती है।

इस जीव को देखते हो? पहचान सकते हो? यह मल्लिका है जो धीरे-धीरे बड़ी हो रही है और माँ के स्थान पर अब मैं उसकी देख-भाल करती हूँ।...यह मेरे अभाव की सन्तान है। जो भाव तुम थे, वह दूसरा नहीं हो सका, परन्तु अभाव के कोष्ठ में किसी दूसरे की जाने कितनी-कितनी आकृतियाँ हैं! जानते हो मैंने अपना नाम खोकर एक विशेषण उपार्जित किया है और अब मैं अपनी दृष्टि में नाम नहीं, केवल विशेषण हूँ।

किवाड़ बन्द करके आसन की ओर लौट पड़ती है।

व्यवसायी कहते थे, उज्जयिनी में अपवाद है, तुम्हारा बहुत-सा समय वारांगणाओं के सहवास में व्यतीत होता है।...परन्तु तुमने वारांगणा का यह रूप भी देखा है? आज तुम मुझे पहचान सकते हो? मैं आज भी उसी तरह पर्वत-शिखर पर जाकर मेघ-मालाओं को देखती हूँ। उसी तरह 'ऋतुसंहार' और 'मेघदूत' की पंक्तियाँ पढ़ती हूँ। मैंने अपने भाव के कोष्ठ को रिक्त नहीं होने दिया। परन्तु मेरे अभाव की पीड़ा का अनुमान लगा सकते हो?

कुहनियाँ आसन पर रखकर बैठ जाती है। और ग्रन्थ हाथों में उठा लेती है।

नहीं, तुम अनुमान नहीं लगा सकते। तुमने लिखा था कि एक दोष गुणों के समूह में उसी तरह छिप जाता है, जैसे चाँद की किरणों में कलंक; परन्तु दारिद्रय नहीं छिपता। सौ-सौ गुणों को छा लेता है - एक-एक करके नष्ट कर देता है।

बोलती-बोलती और अन्तर्मुख हो जाती है।

परन्तु मैंने यह सब सह लिया। इसलिए कि मैं टूटकर भी अनुभव करती रही कि तुम बन रहे हो। क्योंकि मैं अपने को अपने में न देखकर तुममें देखती थी। और आज यह सुन रही हूँ कि तुम सब छोड़कर संन्यास ले रहे हो? तटस्थ हो रहे हो? उदासीन? मुझे मेरी सत्ता के बोध से इस तरह वंचित कर दोगे?

बिजली कौंधती है और मेघ-गर्जन सुनायी देता है।

वही आषाढ़ का दिन है। उसी तरह मेघ गरज रहे हैं। वैसे ही वर्षा हो रही है। वही मैं हूँ। उसी घर में हूँ। किन्तु...!

पात्र - मल्लिका

नाटक - आषाढ़ का एक दिन

नाटककार - मोहन राकेश

दुलारी बाई : मन्दिर में आना तो बहुत महंगा पड़ता है, भई। अब देखो न, एक पैसा चढ़ाना पड़ा। क्या फायदा ऐसी भगती से? कहते सब यही हैं कि भगवान तो भावना के भूखे होते हैं-लेकिन वो पुजारी की बच्चा-कैसे घूर-घूर कर देख रहा था मुझे। उससे पिंड़ छुड़ाने के लिए मुझे एक पैसा निकालना ही पड़ा। नहीं, इस तरह का बेमतलब खर्चा ठीक नहीं। भगवान को तो भावना से खुश हो जाना चाहिए। ये इतने बढ़िया नये जूते किसके हैं? कैसे चमाचम चमक रहे हैं। **(उठाकर देखती है।)** बहुत कीमती हैं। किसके हैं ये? यहां तो कोई नज़र आता नहीं है।...बापू कहा करते थे-अगर कहीं कोई चीज़ पड़ी हुई मिल जाए तो तीन बार पुकारना चाहिए, कोई मालिक है इसका? जवाब न मिले तो उस चीज़ को भगवान की भेंट मानकर रख लेना चाहिए...**(जूते उठा कर तीन बार धीरे-धीरे पुकारती है।)** कोई मालिक है इसका?...नहीं है। मैंने किसन भगवान को एक पैसा चढ़ाया था...हो सकता है, उन्होंने ही मेरे लिए ये जूते भेजे हों-वो तो सबके मन की इच्छा जानते हैं। भगवान को यह भी मालूम था कि मैं ननकू मोची के पास जा रही थी। अब कहीं जाने की ज़रूरत नहीं। प्रभु ने मेरा कारज पूरा कर दिया। इन्हें पहन कर तो देखूं। आहा, एकदम फिट्ट आए हैं-भगवान की दी हुई चीज़ ऐसी-वैसी कैसे हो सकती है? उन्हें तो मेरे पांवों के नाप का भी पता होगा। लेकिन ये जो पुराने जूते हैं, इन्हें घर में पहना करूंगी। नहीं, वो जो बाबा आए थे परलोक से - उन्होंने कहा था, ये जूते तुम्हारी किस्मत के बीच में अड़े हुए हैं। तो, क्या इन्हें छोड़ दूं यहीं? मन्दिर के सामने छोड़ूंगी तो भगवान और ज्यादा किरपा करेंगे मुझ पर। ...वो तो एक पैसे से ही इत्ते परसन्न हो गये कि एकदम नये जूते भेज दिए मेरे लिए। हाय, कित्ते मुलायम हैं। हरे किस्ना हरे किस्ना, ऐसी-दया करते रहना...हरे किस्ना, हरे किस्ना--

पात्र - दुलारी बाई
नाटक - दुलारी बाई
नाटककार - मणि मधुकर

पत्नी : वह गया--(वह फ़ुर्ती से दौड़ कर पति तक जाती है, घुटनों पर गिर कर उसकी तलवार खींच कर निकालती है।) वह चला गया-और हम ज़िंदा बच गये। (अकस्मात वह पागलों की तरह सिसकने और हंसने लगती है और बड़ी मुश्किल से अपने को इतना संभाल पाती है कि उसके बंधन काट सके।) नाराज़ न हों - ये खुशी के आंसू हैं--(वह उसका एक हाथ हाथ में लेकर प्यार से उठा कर अपने गाल पर रखती है।) मैं देख रही थी रस्सी की रगड़ से तुम्हारे हाथ कटे जा रहे थे, खून निकल आया था। तुमने कितनी वेदना पायी होगी मेरे स्वामी, मगर मैं तुम्हें बताती हूं (उसके कंधे से लग कर) कि वह, उसका जंगलीपन, उसकी ज़बरदस्ती मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकीं--क्यों कि मेरे मन में बस हम दोनों के संग संग रहने की आदत थी। उसको वह नहीं डिगा सकता था। (उसकी बाहें सरक कर पुरूष के गले में पड़ने लगती हैं।) जो हुआ मैं भूल जाऊंगी प्रियतम, कसम खाती हूं, और हम पहले जैसे--। (दोनों की आंखें पहली बार चार होती हैं और वह बोलते बोलते रूक जाती है। उसकी बाहें धीरे धीरे उसकी गरदन से उत्तर आती हैं। वह उसे घूरती रहती है फिर पीछे सरक जाती है।) ऐसे क्यों देख रहे हो मुझे। (वह न बोलता है न हिलता है-सिर्फ़ मौन, निर्मम तिरस्कार से उसे देखता रहता है।) तुम्हारी आंखें--(और पीछे हट जाती है) यह क्या है जो मुझे इनमें दीखता? (उसकी दहशत बढ़ती जाती है और वह घबरा कर सर हिलाती है।) नहीं, नहीं, तुम ऐसी बात नहीं सोच सकते। (हथेलियों से चेहरा ढांकते हुए।) मैं नहीं देख सकती - नहीं देख सकती। (वह रोने लगती है। पति अचल निर्मम बैठा रहता है, उसे घूरता जाता है। सहसा वह उठ खड़ी होती है, उसकी तलवार उठा लेती है और उसे मूठ की ओर से पकड़ा देती है।) लो, यह लो और मुझे मार डालो। यही तुम्हारे मन में है तो मार डालो। यही तुम्हारे मन में है तो मार डालो। (तड़प कर) मार डालो मुझे मगर इस तरह तिरस्कार से मत देखो- (वह बैठा रहता है। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं आता जाता, वह उससे तलवार भी नहीं लेता। धीरे धीरे औरत का हाथ नीचे आ जाता है।) नहीं यह तिरस्कार भी नहीं, तुम निर्दय हो। (वह चौंक कर अलग हट जाती है फिर पलट कर असहाय, घबरायी हुई उसकी ओर देखती है।) मैंने तुम्हारे सिवाय किसी पुरूष को नहीं जाना - किसी की कामना नहीं की। मैंने नहीं चाहा था कि मुझ पर ऐसी गुज़रे - (वह चुप रहता है।) तुम क्या चाहते हो मैं क्या करूं? चली जाऊं और तुमको कभी मुंह न दिखाऊं? कहां जाऊंगी मैं? क्या करूंगी मैं - तुम्हारे बिना। (सहसा उसका अंहकार जाग उठता है।) जवाब दो। क्या मैं ऐसी गयी बीती हो गयी कि तुम जवाब में एक शब्द नहीं बोल सकते- जैसे कुत्ते को रोटी फेंकते हैं, वैसे भी नहीं? (उसका गुस्सा बढ़ता जाता है

और वह उसकी ओर आती जाती है।) मैं अब वह नहीं हूं जो तुम्हारे मकान में दासी की बेटी थी। मैं तुम्हारी पत्नी हूं। मैं तुम्हारी हमनिवाला और हमबिस्तर हूं। मेरी बात का जवाब दो। (पुरूष की आंखों में तिरस्कार बना रहता है। वह उसके ऊपर तलवार उठाती है।) जवाब दो। (विक्षिप्त होकर) जवाब दो-जवाब दो-

पात्र - पत्नी

नाटक - रोशोमोन

नाटककार - फ़े और माईकेल कैनिन

(अकूतागावा की कहानियों पर आधारित)

ऐन्टीगोनी : देख रही हूँ- नहीं एक भी यहाँ
जिसे आत्मीय कह सकूँ
जाते वक़्त आँख से जिसकी आँसू टपके
हैमन से शादी तो कोरा स्वप्न रह गई!
परस हवा का
दरस सूर्य-किरणों का अंतिम...

इस खाई में
जो है आधी क़ब्र
और आधा है कमरा नई बहू का
अब मुझको रहना है अपने
अन्तिम क्षण तक।
इसी राह से मैं उतरूँगी
परसीफ़ोनी रानी के उस रंगमहल में
जहाँ प्रतीक्षारत
मेरे आत्मीय स्वजन फिर मुझे मिलेंगे।
उस टोली में मिलनेवाली
मैं हूँ सबसे नयी
इसी से सबसे अधिक भयावह
मेरा भाग्य तय हुआ।
जीवन के कितने थोड़े वसंत देखे थे मैंने
किन्तु वहाँ माँ होगी मेरी
पिता मिलेंगे
मुझे देखकर दुखी सदा के ये दो चेहरे
सहज खिलेंगे।
और एटियोक्लीज़ मिलेगा
वह भी मुझे देखकर होगा ख़ुश
मैंने ही संस्कार किये थे अन्तिम
इन तीनों के सारे
मैंने ही धोये थे इनके मृत शरीर
अभिषिक्त किया था इन्हें
दफ़्न होने के पहले।

यही किया जब पॉलीनीसिस के प्रति मैंने
तो इनाम यह दिया मुझे राजा साहब ने।
भाई की मिट्टी सुधारना
शासन ने ग़द्दारी मानी
ज़बर्दस्त
मैं जीते-जी चिनवाई जाऊँगी गड्ढे में
ईंट और पत्थर के बीचों।
मुझे खींचकर ले जाये जल्लाद
ब्याह के क्षण वेदी से
माँ बनने से रोके मामा।
जीते-जी दफ़नाया जाना खेल नहीं है।
किसी तरह की नीति-नियम का
राजाज्ञा से मेल नहीं है।
मेरा पाप मुझे कोई बढ़कर समझाये।
भाई की माटी सुधारने की कोशिश में
उल्लंघन किस मानवीय या ईश्वरीय
विधि का होता है?
यह अरण्यरोदन है लेकिन
सभी आदमी डरे हुए हैं
और ईश्वर तो बहरा ही सदा रहा है
ऐसे सारे संयोगों में।
नाहक है उसको पुकारना।
लगता है अच्छे का बदला सदा बुरा है।
आज हो रहा है जो कुछ भी
अगर वही है न्याय ईश्वरी
तो कहना ही होगा ईश्वर में बारे में
मेरे सारे ख़्याल ग़लत थे।
और अगर ग़लती पर क्रियोंन हैं तो उनको
आगे-पीछे ठीक भुगतना होगा इसका दंड।

पात्र - एंटीगोनी
नाटक - एंटीगोनी
नाटककार - सोफोक्लीज़